श्री जगदीश आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ॐ जय.. ।।

जो ध्यावे फल पावे, दु:खबिन से मन का ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ॐ जय.. ।।

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं किसकी ।। ॐ जय.. ।।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ।। ॐ जय.. ।।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता ।
मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जय.. ।।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ।। ॐ जय.. ।।

दीन-बन्धु दु:ख-हर्ता, ठाकुर तुम मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, द्वार खड़ा तेरे ।। ॐ जय.. ।।

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ॐ जय.. ।।

तन मन धन सब है तेरा स्वामी सबकुछ है तेरा ।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।। ॐ जय.. ।।

स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के संकट
दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ॐ जय.. ।।